CORDOVA® App 24X7
For Teachers Only

FREE SMART CLASS SOFTWARE
WITH WEB SUPPORT
FOR TEACHERS ONLY

नव भारती

हिंदी पाठमाला

6

Scanned with CamScanner

विषय-सूची

	पाठ का नाम	विधा	कवि/लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	नव प्रभात	कविता	सोहनलाल द्विवेदी	9
2.	दो कलाकार	भावपूर्ण कहानी	मन्नू भंडारी	13
3.	बूढ़ी अम्माँ की बातें	लोककथा	–	19
	केवल पढ़ने के लिए (वन-एक राष्ट्रीय संपत्ति)			25
4.	अक्षरों का महत्त्व	निबंध	गुणाकर मुले	26
5.	मैं सबसे छोटी होऊँ	कविता	सुमित्रानंदन पंत	31
6.	अँधेर नगरी	नाटक	भारतेंदु हरिश्चंद्र	35
7.	नादान दोस्त	शिक्षाप्रद कहानी	मुंशी प्रेमचंद	44
	केवल पढ़ने के लिए (बंधन का सुख)			51
8.	अरुणिमा सिन्हा	साक्षात्कार	–	52
9.	प्रकृति का उपहार: मलेशिया	डायरी	संकलित	59

Scanned with CamScanner

भाषा की योग्यता और कौशल

पाठ संख्या	सुनना, बोलना और पढ़ना	लिखना	गतिविधियाँ	मूल्य
1.	कविता का लयबद्ध गान, कंठस्थ करना, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, प्रश्नोत्तर, आशय तथा कवि परिचय।	अति लघु, लघु, दीर्घ प्रश्न, पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, समान अर्थ छाँटकर लिखना, अनेकार्थक शब्दों के अर्थ छाँटकर लिखना तथा 'सु' उपसर्ग जोड़कर बने शब्द व उनके अर्थ लिखना।	ये भी जानें, लयबद्ध गान, प्रकृति के अनूठे दृश्य को देखकर विशेषताएँ लिखना तथा गतिविधि।	प्रात:काल का स्वर्णिम दृश्य, नई ऊर्जा का संचार।
2.	चरित्र-चित्रण, परिणाम, चिंतनात्मक पठन, कार्य-कारण संबंध, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, प्रश्नोत्तर तथा लेखिका परिचय।	अति लघु, लघु, दीर्घ प्रश्न, पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, संज्ञा शब्दों को रेखांकित करना, संज्ञा के भेद में ✓ निशान लगाना, भाववाचक संज्ञा बनाकर खाली जगह भरना तथा संयुक्त व द्वित्व व्यंजन वाले शब्द लिखना।	सूक्तियाँ तैयार करना, विषयानुसार चर्चा करना, स्क्रैप-बुक में चित्र चिपकाकर उनके बारे में लिखना, शोध तथा निबंध-लेखन।	किसी के जीवन को बनाने वाला ही असली कलाकार है।
3.	पठन-पाठन, शब्दार्थ, शब्दों का शुद्ध उच्चारण, मौखिक अभिव्यक्ति तथा प्रश्नोत्तर।	गद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ प्रश्न, पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, विराम-चिह्न लगाना, विराम-चिह्न संबंधी अशुद्धियाँ दूर करना तथा 'ड़' व 'ढ़' में अंतर समझकर उनसे बने शब्द लिखना।	ये भी जानें, चर्चा करना, सूची बनाना व क्षेत्र विशेष के सामान का उल्लेख करना, अनुभव के आधार पर लिखना तथा हँसने की बारी।	निराशावादी नहीं आशावादी बनना तथा निरंतर कर्म करना।
4.	पठन-पाठन, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, प्रश्नोत्तर, आविष्कार तथा अक्षरों का जीवन में महत्त्व समझना।	गद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ प्रश्न, पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, कारक-चिह्नों पर गोला लगाना, कारक के भेद में ✓ निशान लगाना तथा सही शब्द छाँटकर लिखना।	श्रवण-वाचन, चित्र-संकेतों के माध्यम से बात कहना, इशारों में अपनी बात बताना, विषयानुसार उत्तर देना, शोध, अनुच्छेद-लेखन तथा हँसने की बारी।	अक्षरों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है।
5.	सस्वर वाचन, कविता कंठस्थ करना, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, आशय, प्रश्नोत्तर तथा कवि परिचय।	पद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ प्रश्न, पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, अनेकार्थक शब्दों के अर्थ में ✓ निशान लगाना, उदाहरणानुसार वाक्य बदलना, तद्भव-तत्सम शब्द तथा समान तुक वाले शब्द लिखना।	विषयानुसार संवाद, अनुभव के आधार पर लिखना तथा कविता-लेखन।	माँ की ममता अनमोल है।
6.	पठन-पाठन, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, मौखिक अभिव्यक्ति, प्रश्नोत्तर, मंचन तथा लेखक परिचय।	किसने, किससे कहा?, अति लघु, लघु, दीर्घ प्रश्न, पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, सर्वनाम शब्द रेखांकित करके लिखना, सही सर्वनाम का प्रयोग करना, सर्वनाम के भेद में ✓ निशान लगाना तथा विलोम शब्द छाँटकर लिखना।	जानकारी हासिल करना, नाटक-मंचन तथा शोध।	अनुभव-समझ, लालच बुरी बला, यथा-राजा तथा-प्रजा।
7.	पठन-पाठन, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, प्रश्नोत्तर, सुनना-सुनाना, वर्णनात्मक अध्ययन तथा लेखक परिचय।	गद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ प्रश्न, पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, उद्देश्य-विधेय छाँटना, उद्देश्य से खाली जगह भरना, अनुस्वार-अनुनासिक का प्रयोग करना तथा अनेकार्थक शब्दों का वाक्य प्रयोग करना।	संवाद बढ़ाना, घोंसला बनाना, समस्या का समाधान लिखना, शोध तथा विचार लिखना।	बड़ों का कहना मानना, जानकारी के अभाव में कुछ न करना, किसी जीव के जीवन में दख़ल न देना।
8.	पठन-पाठन, साक्षात्कार, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, घटना वर्णन तथा प्रश्नोत्तर।	✓ या ✗ निशान लगाना, अति लघु, लघु, दीर्घ प्रश्न, पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, बहुवचन रूप में ✓ निशान लगाना, वचन-परिवर्तन करके वाक्य लिखना, स्त्रीलिंग रूप लिखना तथा लिंग-परिवर्तन करके वाक्य लिखना।	श्रवण-वाचन, ये भी जानें, विषयानुसार चर्चा करना, कोलॉज बनाना, पर्वतों के नाम लिखना, सूची तैयार करना तथा खेल-खेल में।	लगन, मेहनत और आत्मविश्वास के बल पर हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।
9.	पठन-पाठन, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, प्रश्नोत्तर तथा मलेशिया की जानकारी।	गद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ प्रश्न, पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, अनेक के लिए एक शब्द में ✓ निशान लगाना, उपसर्ग लगाकर शब्द बनाना, मूल शब्द व प्रत्यय अलग करना तथा मुहावरे।	ये भी जानें, मानचित्र पर अंकित करना, ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में पढ़कर बताना, डायरी-लेखन, शोध तथा जीवन-कौशल।	किसी भी देश के भ्रमण से उस देश की पारंपरिक धरोहर, उन्नति तथा अंतर्राष्ट्रीय नज़रिए का पता चलता है।

Scanned with CamScanner

शिक्षक के लिए– दिए गए चित्रों से संबंधित कक्षा में चर्चा कीजिए; जैसे– हमारे जीवन में शिक्षा का बहुत महत्त्व है। अतः हमें खुद भी पढ़ना चाहिए और दूसरों को भी पढ़ाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

1 नव प्रभात

(कविता)

*प्रातःकाल में सूरज की किरणें, आस-पास की हरियाली, पक्षियों का मधुर कलरव एवं प्राकृतिक सौंदर्य से मनुष्य के मन में नई ऊर्जा का संचार होता है। कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड** पर **कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** का प्रयोग करें, जिसके माध्यम से बच्चे रोचकपूर्ण एवं प्रभावशाली ढंग से इस कविता का लयबद्ध गान करेंगे।*

आया **सुभग** सबेरा **राही**!
अग-जग की **निद्रा** है टूटी,
अरुण किरण अंबर में छूटी,
किया मलय ने फेरा राही!
आया सुभग सबेरा राही!

डाल-डाल में फूटी **कोंपल**,
स्वर्णिम, **ताम्र**, नील और **उज्ज्वल**,
किसने रंग बिखेरा राही!
आया सुभग सबेरा राही!

तुम भी अपनी आँखें खोलो,
कनक-किरण के जल में धो लो,
मन का मिटे अँधेरा राही!
आया सुभग सबेरा राही!

भर लो यह **आलोक प्राण** में
विहगों की **रव कंठ**-गान में,
नव **प्रभात** वन डालो राही!
आया सुभग सबेरा राही!

–सोहनलाल द्विवेदी

मूल्य: प्रातःकाल का स्वर्णिम दृश्य, नई ऊर्जा का संचार।

Scanned with CamScanner

कवि परिचय : हिंदी के प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी का जन्म 22 फरवरी, 1906 को उत्तर प्रदेश के फ़तेहपुर ज़िले में हुआ। इनकी रचनाएँ ओजपूर्ण एवं भावपूर्ण की परिचायक हैं। इनके जीवनकाल में इन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से अलंकृत किया गया तथा वर्ष 1969 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1 मार्च, 1988 को इस राष्ट्रकवि ने अपना शरीर त्याग दिया।

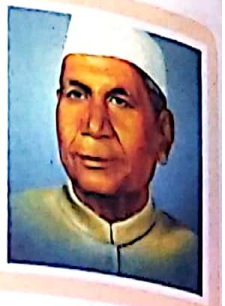

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– भैरवी, प्रभाती, युगाधार, कुणाल, चेतना आदि।

शब्द-अर्थ

सुभग	– भाग्यशाली	कोंपल	– वृक्ष की नई और कोमल पत्ती	स्वर्णिम	– सोने का, सुनहरा
ताम्र	– ताँबा	निद्रा	– नींद	अंबर	– आकाश
उज्ज्वल	– उजला	कनक	– सोना, स्वर्ण	राही	– पथिक
प्राण	– जीवन	किरण	– प्रकाश-रेखा	आलोक	– प्रकाश करने वाला
विहग	– पक्षी	कंठ	– गला	प्रभात	– सुबह, सवेरा
रव	– गुंजार, ध्वनि	अरुण	– सूरज	डाल-डाल	– टहनी-टहनी

☞ **वाचन/श्रुतलेख–** निद्रा, सुभग, स्वर्णिम, ताम्र, उज्ज्वल, प्राण, अँधेरा, विहग, प्रभात।

अभ्यास

कक्षा में स्मार्ट बोर्ड पर कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर के माध्यम से इस पाठ का अभ्यास-कार्य कराएँ।

पाठ से

मौखिक

सोचिए और बताइए–

(क) प्रात:काल का दृश्य कैसा होता है? अपने शब्दों में बताइए।

(ख) यदि इस कविता का कोई और शीर्षक देना होगा, तब आप क्या शीर्षक देंगे?

(ग) 'मन का मिटे अँधेरा राही' से कवि का क्या तात्पर्य है?

लिखित

1. **अति लघु उत्तर लिखिए–**

(क) इस कविता में किस समय का वर्णन किया गया है?

(ख) 'सुभग सवेरा' से क्या तात्पर्य है?

(ग) 'नव प्रभात' कविता के कवि का नाम लिखिए।

2. **लघु उत्तर लिखिए–**

(क) इस कविता में कवि राही से क्या और क्यों करने के लिए कहते हैं?

Scanned with CamScanner

(ख) इस कविता का शीर्षक 'नव प्रभात' क्यों रखा गया है?

(ग) सवेरा होते ही प्राकृतिक दृश्यों में किस तरह के परिवर्तन देखने को मिलते हैं?

3. **दीर्घ उत्तर लिखिए–**

(क) 'नव प्रभात' कविता का मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) दी गई संकेत पंक्तियों का सप्रसंग भावार्थ लिखिए–

संकेत– (i) डाल-डाल ..... बिखेरा राही! (पृष्ठ-9)

(ii) भर लो ..... सबेरा राही! (पृष्ठ-9)

पाठ से आगे

आपकी सोच-समझ

(क) सुबह-सवेरे मन के हर्षित होने का क्या कारण है?

(ख) सवेरे जल्दी उठने के क्या-क्या फ़ायदे हैं?

अनुमान और कल्पना

☞ यदि सूरज समय पर न उगे, पवन बहना छोड़ दे तथा पक्षी चहचहाना बंद कर दें, तो हमारा जीवन कैसा हो जाएगा?

भाषा ज्ञान — पर्यायवाची शब्द, अनेकार्थक शब्द, उपसर्ग

1. समान अर्थ बताने वाले शब्दों को **पर्यायवाची शब्द** कहते हैं; जैसे– जल- पानी, नीर।

दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द छाँटकर लिखिए–

जग	–	.....	.....
राही	–	.....	.....
आँख	–	.....	.....
पक्षी	–	.....	.....
प्रभात	–	.....	.....

संसार	राहगीर
नेत्र	दुनिया
पथिक	नयन
खग	प्रात:
भोर	विहग

2. जिन शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं, उन्हें **अनेकार्थक शब्द** कहते हैं; जैसे– जग — एक प्रकार का बरतन / संसार

रेखांकित शब्दों के उचित अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखिए–

(क) **अंबर** में तारे टिमटिमाते हैं। ..... (कपड़ा / आसमान)

(ख) **डाल** में कोंपल फूटी। ..... (टहनी / डालना)

(ग) अपना मुख **जल** से धोलो। ..... (इज़्ज़त / पानी)

(घ) **कनक**-किरण के जल में धो लो। ..... (गेहूँ / सोना)

(ङ) **अरुण** किरण अंबर में छूटी। ..... (सूरज / सिंदूर)

Scanned with CamScanner

3. उपसर्ग शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं; जैसे- कविता में 'सुभग' शब्द आया है। इस शब्द में 'सु' उपसर्ग है जिसका उपयोग 'अच्छा', 'भला' आदि का अर्थ दर्शाने के लिए हुआ है।

अब आप उदाहरणानुसार शब्दों के आगे 'सु' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए तथा उनके अर्थ भी लिखिए-

अवसर	–	सुअवसर	अच्छा मौका	पुत्र	–
कर्म	–	.....	.....	मति	–
गंध	–	.....	.....	विचार	–

रचनात्मक अभिव्यक्ति

ये भी जानें

☞ सूर्य सौरमंडल के केंद्र में स्थित है। यह पृथ्वी से लगभग 15 करोड़ किलोमीटर दूर है। सौरमंडल के लिए प्रकाश एवं ऊष्मा का एक मात्र स्रोत सूरज ही है। इसके प्रकाश की गति तीन लाख किलोमीटर प्रति सेकंड है जो 8 मिनट 22 सेकंड में पृथ्वी तक पहुँचता है।

परियोजना-निर्माण

☞ 'नव प्रभात' कविता का लयवद्ध गान कीजिए।

☞ सवेरा होते ही हमारे चारों ओर एक अनोखे दृश्य का सृजन होता है। प्रकृति के इस अनूठे दृश्य को देखिए तथा इसकी विशेषताओं के बारे में लिखिए।

गतिविधि

☞ **आइए, दिन में तारे देखते हैं–**

1. कागज़ के बीच टॉर्च को इस प्रकार रखिए कि उसका काँच कागज़ से सटा रहे।

2. अब टॉर्च के काँच के चारों ओर एक गोला खींचिए तथा गोले के अंदर सुई से छोटे-छोटे छेद कीजिए।

3. अब कागज़ में छेद किए हुए गोले वाले भाग को टॉर्च पर सामने की तरफ़ रखिए। चित्रानुसार टॉर्च के चारों ओर कागज़ लपेटकर रबरबैंड लगा दीजिए, ध्यान रखें कि टॉर्च का स्विच कागज़ के बाहर रहे।

4. कमरे की किसी सादी दीवार पर टॉर्च द्वारा कुछ दूरी से रोशनी डालिए। धीरे-धीरे बत्तियाँ, खिड़कियाँ एवं दरवाज़ों को बंद करके देखिए। जैसे-जैसे कमरे में अँधेरा बढ़ता जाएगा, वैसे ही हमें दीवार पर चमकते बिंदु स्पष्ट दिखाई देने लगेंगे, जैसे कि हमें रात को तारे दिखाई देते हैं।

5. अब धीरे-धीरे बत्तियों अथवा खिड़कियों को खोलिए। हमें वे चमकते बिंदु अदृश्य होते दिखाई देंगे। इसकी तुलना रात्रि के दृश्य से कीजिए।

Scanned with CamScanner

2

दो कलाकार

(भावपूर्ण कहानी)

असली कलाकार किसे कहेंगे? क्या अभिनय करने, चित्र बनाने आदि का नाम ही कला है? नहीं, अनाथ व बेसहारा बच्चों को सहारा देना, उनके जीवन को बनाना, दूसरों के दुखों में शामिल होकर अपनी कला से उनके जीवन को निखार देना ही असली कला है। ऐसे कलाकारों का स्थान सर्वोपरि है।
*कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड** पर **कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** का प्रयोग करें, जिसके माध्यम से बच्चे इस पाठ को रोचकपूर्ण एवं प्रभावशाली ढंग से पढ़ेंगे।*

"रूनी, उठ।" कहते हुए चादर खींचकर चित्रा ने सोती हुई अरुणा को उठाया।

"अरे! क्या है?" आँखें मलते हुए थोड़े गुस्से में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई अपने नए बनाए हुए चित्र के सामने ले जाकर खड़ा करते हुए बोली, "देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।"

"ओह! तो इसे दिखाने के लिए तुमने मेरी नींद ख़राब कर दी।"

"अरे! ज़रा इस चित्र को तो देख, न पहला इनाम मिला तो नाम बदल देना।"

अरुणा चित्र देखकर मुँह धोने के लिए बाहर चली गई। लौटी तो देखा, तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाज़े पर खड़े उसका इंतज़ार कर रहे हैं। आते ही बोली, "आ गए बच्चो! बैठो, मैं अभी आई।"

"क्या ये बच्चे पाल रखे हैं तुमने!" फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, "एक दिन तुम्हारे विद्यालय का चित्र बनाना होगा। लोगों को दिखाया करेंगे कि हमारी एक दोस्त थीं जो बस्ती के चौकीदारों, नौकरों, चपरासियों आदि के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी **पंडिताइन** और **समाज-सेविका** समझती थीं।"

चाय पीते-पीते चित्रा बोली, "पिता जी का पत्र आया है। लिखा है, जैसे ही यहाँ कोर्स ख़त्म हो जाए, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी, पिता जी कभी मना नहीं करेंगे।"

"हाँ भाई! अमीर पिता की इकलौती बिटिया जो ठहरी। तुम्हारी इच्छा कभी टाली जा सकती है! पर सच कहती हूँ, मुझे तो सारी कला बिना मतलब की लगती है। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे।" अरुणा **आवेश** में बोली।

"तो तुम मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?" चित्रा ने पूछा।

"तुम्हें दुनिया से कोई मतलब नहीं। दुनिया में कितनी ही बड़ी घटना घट जाए पर यदि उसमें तुम्हारे चित्र के लिए कोई विषय न छिपा हो तो तुम्हारे लिए वह घटना कोई महत्त्व नहीं रखती। हर पल, हर जगह, हर चीज़ में तुम अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती हो।

सोचिए और बताइए–
क्या चित्रा विदेश चली जाएगी?
हाँ ☐ नहीं ☐

Scanned with CamScanner

कागज़ पर इन **निर्जीव** चित्रों को बनाने के बदले दो-चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती?" अरुणा ने कहा।

"वह काम तुम्हारे लिए छोड़ दिया। मैं चली जाऊँगी तो तुम सारी दुनिया की भलाई करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।" ये कहते हुए चित्रा हँस पड़ी।

इस तरह दिन बीत रहे थे। अचानक वर्षा ऋतु ने दस्तक दी। इस बार प्रकृति ने अपना ऐसा भयानक रूप दिखाया कि लगातार तीन दिनों से मूसलाधार बारिश हो रही थी। ऐसी बारिश जो थमने का नाम ही नहीं ले रही थी। रोज़ अख़बारों में बाढ़ की ख़बरें आती थीं। **बाढ़ पीड़ितों** की दशा बिगड़ती जा रही थी। ये सब दृश्य देख-देखकर अरुणा दुखी थी।

"आज शाम को **स्वयं सेवकों** का एक दल जा रहा है। मैं भी उसके साथ ही जा रही हूँ।" अरुणा ने चित्रा से कहा।

इस तरह शाम को अरुणा चली गई।

पंद्रह दिन बाद अरुणा लौटी। नहा-धोकर, खा-पीकर लेटने के लिए चली, तभी उसकी नज़र चित्रा के नए चित्रों की ओर गई। तीन चित्र बने रखे थे। तीनों बाढ़ के चित्र थे। जो दृश्य वह अपनी आँखों से देखकर आ रही थी, वैसे ही दृश्य चित्रा ने भी बना रखे थे।

शाम को चित्रा घर लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी खुश हुई।

"क्यों चित्रा! तुम्हारे जाने का तय हो गया?"

"हाँ, अगले बुधवार को मैं घर जाऊँगी और बस एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी।" खुशी उसके स्वर में से छलक पड़ी।

आज वह दिन आ ही गया जब चित्रा को जाना था। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक-एक करके चित्रा सभी से मिल आई। बस अपने गुरु जी से मिलना रह गया था सो उनका आशीर्वाद लेने चल पड़ी।

तीन बज गए थे पर चित्रा अभी तक लौटी नहीं थी। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली थी। अरुणा ने सोचा, "वह खुद जाकर देख आए कि आख़िर क्या बात हो गई!" तभी **हड़बड़ाती** हुई चित्रा आती है, "बड़ी देर हो गई न। अरे! क्या करूँ, बस कुछ ऐसा हो गया कि रुकना ही पड़ा।"

अरुणा हैरानी से बोली, "आख़िर ऐसा क्या हो गया जो तुम्हें रुकना पड़ा?" "गर्ग स्टोर के पास जो पेड़ था, उस पेड़ के नीचे अकसर एक गरीब-सी औरत बैठी रहा करती थी न! लौटी तो देखा कि वह वहीं मरी पड़ी है और उसके दोनों बच्चे बुरी तरह रो रहे हैं। उस दृश्य में न जाने क्या था कि मैं अपने को रोक नहीं सकी। एक रफ़-सा स्केच बना ही डाला। बस इसी में देर हो गई।" चित्रा ने कहा।

साढ़े चार बजे चित्रा **होस्टल** के दरवाज़े पर आ गई लेकिन अचानक अरुणा पता नहीं, कहाँ चली गई! उसकी कोई ख़बर नहीं थी। बहुत सारी लड़कियाँ चित्रा को छोड़ने स्टेशन तक भी गईं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थीं। ट्रेन चल पड़ी पर अरुणा नहीं आई।

विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गई। उसकी लगन ने उसकी कला को और ज़्यादा निखार दिया। विदेश में उसके चित्रों की धूम मच गई। गरीब औरत और दो **अनाथ** बच्चों के उस चित्र की तारीफ़ में तो अख़बारों के कॉलम-के-कॉलम भर गए। पहले साल तो अरुणा से पत्र के द्वारा बातचीत होती थी, फिर कम होते-होते एकदम बंद हो

Scanned with CamScanner

गई। पिछले एक साल से तो उसे यह भी मालूम नहीं कि वह कहाँ है? अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' वाला चित्र पहला इनाम पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता हैरान रह जाता! तीन साल बाद जब चित्रा भारत देश लौटी तो उसका बहुत अच्छे से स्वागत हुआ। दिल्ली में उसके चित्रों की **प्रदर्शनी** का बड़ा आयोजन किया गया। **उद्घाटन** करने के लिए चित्रा को ही बुलाया गया। उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी मुलाकात अरुणा से हो गई। 'रूनी' कहकर चित्रा अरुणा के गले से लिपट गई।

"तुम्हें कब से चित्र देखने का **शौक** हो गया, रूनी?"

"चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आई थी। तुम तो एकदम भूल ही गई।"

सोचिए और बताइए– अरुणा के साथ जो बच्चे हैं, वे कौन हैं?

"अरे! ये बच्चे किसके हैं?" दो प्यारे-से बच्चे अरुणा से चिपककर खड़े थे। लड़के की उम्र दस साल की होगी तो लड़की की कोई आठ साल।

"मेरे बच्चे हैं, और किसके! बच्चो, ये तुम्हारी चित्रा मौसी हैं। नमस्ते करो, अपनी मौसी को।" अरुणा ने कहा।

बच्चों ने बड़े आदर से नमस्ते किया। "कैसी मौसी है, प्यार तो कर।" अरुणा ने कहा। चित्रा ने दोनों के सिर पर प्यार से हाथ फेरा। अरुणा ने कहा, "तुम्हारी ये मौसी बहुत अच्छी तसवीरें बनाती हैं, ये सारी तसवीरें इन्हीं की बनाई हुई हैं।"

"मौसी, आप हमें सारी तसवीरें दिखाइए।" बच्चों ने **फ़रमाइश** की। चित्रा उन्हें तसवीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी गरीब औरत वाली तसवीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, "यही वह तसवीर है रूनी, जिसने मुझे इतना मशहूर कर दिया।"

"ये बच्चे रो क्यों रहे हैं, मौसी?" तसवीर को ध्यान से देखकर लड़की ने पूछा।

"इनकी माँ मर गई है। देखती नहीं, मरी पड़ी है। इतना भी नहीं समझती," लड़का मौका मिलते ही बोला, "मौसी, हमें ऐसी तसवीर नहीं, अच्छी-अच्छी तसवीरें दिखाइए, राजा-रानी की, परियों की।"

चित्रा को दोनों बच्चे बड़े ही प्यारे लगे। जैसे ही बच्चे आँखों से दूर हुए, उसने अरुणा से पूछा, "सच-सच बता रूनी, ये प्यारे-प्यारे बच्चे किसके हैं?"

"कहा तो, मेरे!" अरुणा ने हँसते हुए कहा।

Scanned with CamScanner

"अरे! बता ना, मुझे ही बेवकूफ़ बनाने चली है," चित्रा बोली।

एक पल रुककर अरुणा ने कहा, "बता दूँ?" और फिर उस गरीब औरत वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली, "ये ही वे दोनों बच्चे हैं।"

"क्या ....!" आश्चर्य से चित्रा की आँखें खुली-की-खुली रह गईं।

"क्या सोच रही है चित्रा?"

"कुछ नहीं ..... मैं ..... मैं सोच रही थी कि ....." वह शायद विचारों में खो गई।

अरुणा ने उसकी आँखों से लुढ़कते आँसुओं को देखकर पूछा, "क्या हुआ चित्रा? और ये आँसू....!"

चित्रा भावुक स्वर में बोली, "रूनी, तुमने अपनी कला से उन बच्चों का जीवन सँवारा है। आज मुझे समझ में आया कि सच्ची कलाकार मैं नहीं, बल्कि तुम हो।"

—मन्नू भंडारी

मूल्य: किसी के जीवन को बनाने वाला ही असली कलाकार है।

लेखिका परिचय : हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल, 1931 को मध्य प्रदेश के मंदसौर ज़िले में हुआ था। 'आपका बंटी' उपन्यास से लोकप्रियता हासिल करने के बाद उन्होंने कई कहानियाँ और उपन्यास लिखे। 'यही सच है' कहानी पर तो 'रजनीगंधा' नाम की फ़िल्म भी बनाई गई।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– कहानियाँ : एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, त्रिशंकु, आँखों देखा झूठ।

उपन्यास : आपका बंटी, एक इंच मुसकान। **नाटक :** बिना दीवारों का घर।

शब्द-अर्थ

बाढ़ पीड़ित	– बाढ़ से ग्रस्त	**पंडिताइन**	– विदुषी	**प्रदर्शनी**	– नुमाइश
उद्घाटन	– शुभारंभ	**आवेश**	– गुस्से से भरकर	**फ़रमाइश**	– इच्छा ज़ाहिर करना
निर्जीव	– जिसमें जीवन न हो	**होस्टल**	– छात्रावास	**अनाथ**	– जिसके माता-पिता न हों
हड़बड़ाना	– आतुर होना	**स्वयं सेवक**	– अपनी इच्छा से सेवा करने वाला	**शौक**	– दिलचस्पी
समाज-सेविका	– समाज की सेवा करने वाली				

☞ **वाचन/श्रुतलेख–** पंडिताइन, मशहूर, दृश्य, आशीर्वाद, उद्घाटन, होस्टल, प्रदर्शनी, प्रतियोगिता, फ़रमाइश।

अभ्यास

कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड** पर **कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** के माध्यम से इस पाठ का अभ्यास-कार्य कराएँ।

पाठ से

मौखिक

सोचिए और बताइए–

(क) अरुणा और चित्रा का क्या संबंध था और वे कहाँ रहती थीं?

(ख) अरुणा चित्रा को स्टेशन तक छोड़ने क्यों न आ सकी?

(ग) पाठ के अंत में दोनों बच्चों की सच्चाई जानकर चित्रा की आँखों में आँसू क्यों आ गए?

Scanned with CamScanner

लिखित

1. अति लघु उत्तर लिखिए–

(क) चित्रा की रुचि किसमें थी?

(ख) अरुणा किन लोगों के बच्चों को पढ़ाया करती थी?

(ग) तीन साल बाद अरुणा चित्रा से कहाँ मिली?

2. लघु उत्तर लिखिए–

(क) चित्रा के लिए कैसी घटनाएँ कोई महत्त्व नहीं रखती थीं?

(ख) पंद्रह दिन बाद जब अरुणा वापस आई तो उसकी नज़र किस तरह के चित्रों पर पड़ी?

(ग) जिस दिन चित्रा को बाहर जाना था, उस दिन चित्रा को आने में क्यों देर हो गई?

3. दीर्घ उत्तर लिखिए–

(क) चित्रा कैसे मशहूर हो गई?

(ख) चित्रा और अरुणा के स्वभाव में क्या अंतर था?

पाठ से आगे

आपकी सोच-समझ

(क) आप अरुणा और चित्रा में से असली कलाकार किसे मानेंगे और क्यों?

(ख) आपके अंदर कौन-सी कला छिपी है और उस कला की प्रतिभा को निखारने के लिए आप क्या करेंगे?

अनुमान और कल्पना

(क) यदि अरुणा उन दोनों बच्चों की देखभाल नहीं करती, तो उन बच्चों के साथ क्या-क्या हो सकता था?

(ख) जिस चित्र ने चित्रा को इतना मशहूर बनाया, उसे देखकर आपके मन में कौन-कौन-से सवाल उठ रहे हैं?

भाषा ज्ञान — संज्ञा, संज्ञा के भेद, संयुक्त व द्वित्व व्यंजन

1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम को **संज्ञा** कहते हैं; जैसे– राम, लड़का, हँसी।

दिए गए अनुच्छेद में संज्ञा शब्दों को रेखांकित कीजिए–

"क्या ये बच्चे पाल रखे हैं तुमने!" फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, "एक दिन तुम्हारे विद्यालय का चित्र बनाना होगा। लोगों को दिखाया करेंगे कि हमारी एक दोस्त थीं जो बस्ती के चौकीदारों, नौकरों, चपरासियों आदि के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी पंडिताइन और समाज-सेविका समझती थीं।"

2. संज्ञा के तीन भेद होते हैं–

व्यक्तिवाचक संज्ञा – किसी विशेष प्राणी, स्थान, वस्तु का नाम; जैसे– विराट कोहली, दिल्ली, भारत।

जातिवाचक संज्ञा – संपूर्ण जाति का बोध कराने वाले शब्द; जैसे– दादा-दादी, पशु-पक्षी, देश।

भाववाचक संज्ञा – किसी प्राणी, स्थान, वस्तु आदि के गुण, दोष, भाव, अवस्था का बोध कराने वाले शब्द; जैसे– बुढ़ापा, बचपन, हरियाली।

Scanned with CamScanner

दिए गए संज्ञा शब्दों के भेद में ✓ निशान लगाइए–

चित्रा	–	व्यक्तिवाचक संज्ञा	☐	जातिवाचक संज्ञा	☐	भाववाचक संज्ञा	☐
बिटिया	–	व्यक्तिवाचक संज्ञा	☐	जातिवाचक संज्ञा	☐	भाववाचक संज्ञा	☐
मुसकान	–	व्यक्तिवाचक संज्ञा	☐	जातिवाचक संज्ञा	☐	भाववाचक संज्ञा	☐
मौसी	–	व्यक्तिवाचक संज्ञा	☐	जातिवाचक संज्ञा	☐	भाववाचक संज्ञा	☐
अरुणा	–	व्यक्तिवाचक संज्ञा	☐	जातिवाचक संज्ञा	☐	भाववाचक संज्ञा	☐
सच्चाई	–	व्यक्तिवाचक संज्ञा	☐	जातिवाचक संज्ञा	☐	भाववाचक संज्ञा	☐

3. **खट्टा – खटास, अपना – अपनापन**, यहाँ **खटास** और **अपनापन** भाववाचक संज्ञाएँ हैं जो क्रमशः **खट्टा** और **अपना** शब्द से बनी हैं। अब आप कोष्ठक में दिए गए शब्दों को भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित करके खाली जगह भरिए–

(क) मैं चली जाऊँगी तो तुम सारी दुनिया की ..... करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना। (भला)

(ख) अरुणा को देखकर चित्रा को ..... मिली। (खुश)

(ग) जब वह भारत लौटी तो उसके चेहरे पर अनोखी ..... थी। (चमकना)

(घ) अरुणा की बात सुनकर चित्रा को ..... आ गई। (हँसना)

(ङ) अरुणा ने उन दो अनाथ बच्चों का ..... सँवारा। (बच्चा)

4. एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बनने वाले व्यंजन **संयुक्त व्यंजन** कहलाते हैं; जैसे– क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।
जब एक ही व्यंजन का दो बार प्रयोग होता है, तो उसे **द्वित्व व्यंजन** कहते हैं; जैसे– त्त, च्च, स्स, क्क।
अब आप संयुक्त व्यंजन और द्वित्व व्यंजन के प्रयोग से बने चार-चार शब्द लिखिए–

संयुक्त व्यंजनों से बने शब्द – ....

द्वित्व व्यंजनों से बने शब्द – ....

रचनात्मक अभिव्यक्ति

परियोजना-निर्माण

- अरुणा ने अनाथ बच्चों को पढ़ाकर 'साक्षरता अभियान' में सहयोग दिया। अब आप ऐसी सूक्तियाँ तैयार कीजिए, जिससे लोगों में 'साक्षरता अभियान' के प्रति जागरूकता पैदा हो।
- चित्रा और अरुणा दोनों ही कलाकार थीं लेकिन दोनों की कला में क्या अंतर था? इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
- अलग-अलग क्षेत्र के कलाकारों के चित्र अपनी स्क्रैप-बुक में चिपकाइए तथा चित्र के साथ उनके नाम और वे किस क्षेत्र के कलाकार हैं? लिखिए।

शोध

- भारत के चार प्रसिद्ध चित्रकारों के नाम लिखिए। उनमें से किसी एक चित्रकार की उपलब्धियों के बारे में भी बताइए।

लेखन

- अपने प्रिय कलाकार पर 150–180 शब्दों में एक निबंध लिखिए।

Scanned with CamScanner

3

बूढ़ी अम्माँ की बातें

(लोककथा)

किसान के लिए वर्षा वरदान होती है। यदि यही वर्षा खेती के अनुकूल न हो, तो इसका असर फ़सल के साथ-साथ किसान के जीवनयापन तथा उसके पशुओं पर भी पड़ता है, जैसा इस लोककथा में दर्शाया है। गोमा मोरी नाम का एक किसान वर्षा न होने के कारण खेती नहीं करता लेकिन तभी उसे रास्ते में एक बूढ़ी अम्माँ मिलती हैं जो गोमा के लिए किसी पथ प्रदर्शक से कम नहीं हैं। वे गोमा को उसका कर्तव्य याद दिलाती हैं।

*कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड** पर **कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** का प्रयोग करें, जिसके माध्यम से बच्चे इस पाठ को रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से पढ़ेंगे।*

एक था किसान। गोमा मोरी नाम था उसका। **गुज़र-बसर** लायक खेती थी। एक गाय, एक जोड़ी बैल, बीस बकरियाँ थीं। छोटा-सा घर। घर के सामने पशु बाँधने का **बाड़ा**। तीन साल से वर्षा बहुत कम हुई थी। न फ़सलें हुई थीं, न **चारा**। इस वर्ष भी **आषाढ़** सूखा ही रह गया। वर्षा की कोई आशा नहीं बँधी थी। "खेत जोतकर क्या करूँगा?" गोमा ने एक लंबी साँस छोड़ी और मन-ही-मन सोचा। वह बैलों को हाँकते हुए वापस घर की ओर चल पड़ा।

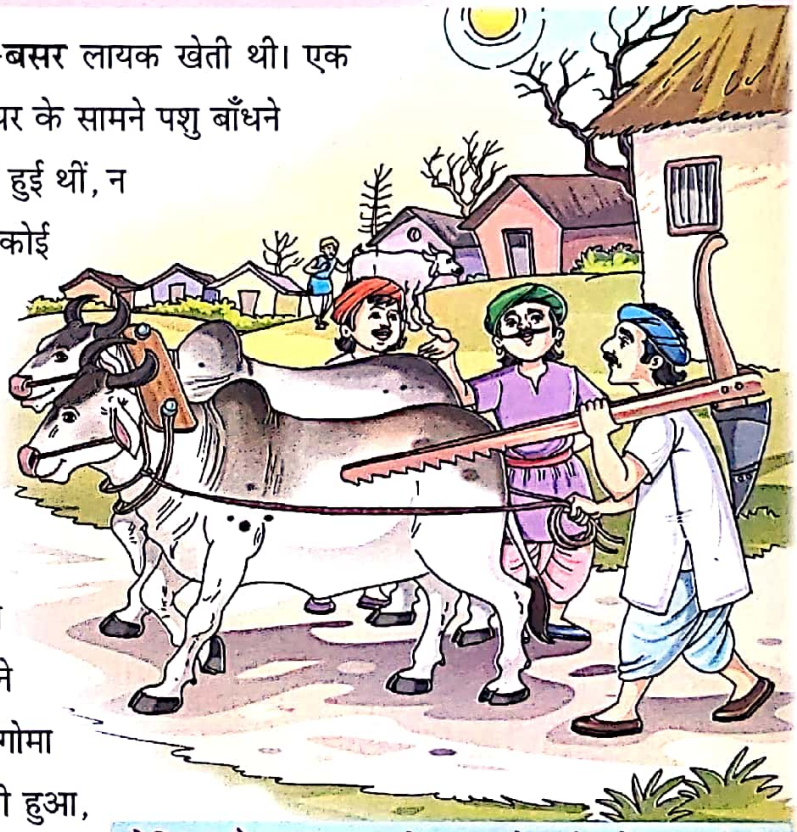

सोचिए और बताइए– तीन साल से वर्षा क्यों कम हुई थी?

अगले दिन गोमा बड़े सवेरे सोकर उठा। गाय, बैल व बकरियों को बाड़े से निकाला, फिर से हिम्मत बटोरी और हल व बैलों को लिए चल पड़ा खेतों की ओर। रास्ते में उसे कई किसानों ने टोककर कहा, "गोमा! खेत जोतने से क्या होगा? वर्षा के तो कोई **आसार** नहीं दिख रहे।" गोमा ने सब की बात सुनी। कई बार उसका मन **डाँवाँडोल** भी हुआ, फिर भी उसने हिम्मत रखी और कुछ सोचकर खेत पर पहुँच गया।

गोमा ने आकाश की ओर देखा। सूरज आग के गोले की तरह जल रहा था। उसने धरती को भी निहारा। खेतों में गहरी और चौड़ी दरारें पड़ गई थीं। वह बैलों को देखकर उनकी दशा से भी चिंतित था। भूख-प्यास सहन करते-करते वे बहुत **दुबले** हो गए थे। वह थोड़ा **निराश** भी हुआ। उसे बैलों की दशा पर दया भी आई। उसने फिर एक लंबी साँस छोड़ी और खेत की **मेड़** पर एक वृक्ष के नीचे बैठकर सोचने लगा, "क्या करे वह, खेत जोते या उसे यों ही पड़ा रहने दे?" वह सोचता रहा। थोड़ी देर बाद वह उठा और दुखी मन से बैलों को हाँककर घर की राह पकड़ ली। उसने **निर्णय** कर लिया कि वह तब तक खेत नहीं जोतेगा जब तक कि वर्षा नहीं हो जाती।

धूप काफ़ी तेज़ थी। दूसरे दिन वह और भी निराश हो गया। उसके पैर न आगे बढ़ते थे और न पीछे जाने की उनमें हिम्मत ही थी। रास्ते में एक पेड़ के नीचे उसने बैलों को रोका और वहीं चबूतरे पर बैठ गया।

तभी वहाँ पर एक बूढ़ी अम्माँ आई। वह भी उसी पेड़ के नीचे बैठ गई। गोमा ने पूछा, "ओ बूढ़ी अम्माँ! कहाँ से आ रही

Scanned with CamScanner

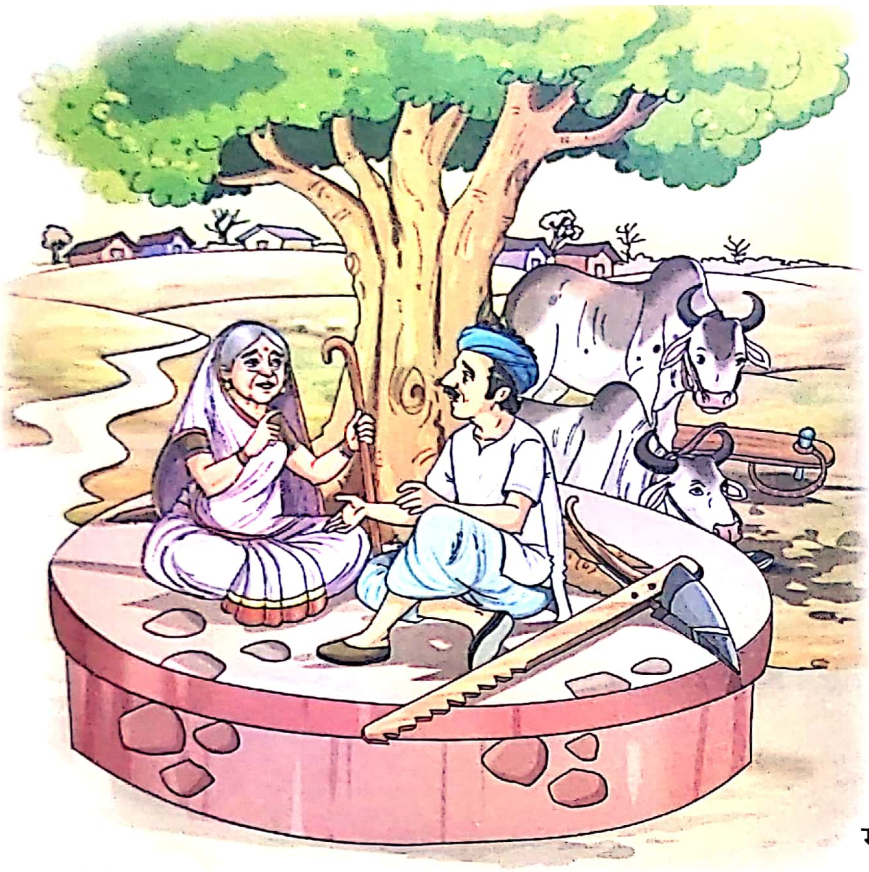

हो इतनी तेज़ धूप में? आपको किधर जाना है?" बूढ़ी अम्माँ ने कहा, "मैं तो अपनी **नातिन** से मिलने पास के गाँव जा रही हूँ, लेकिन तुम इस समय यहाँ क्या कर रहे हो? यह समय तो खेत में हल जोतने का है लेकिन तुम यहाँ आराम कर रहे हो। क्या तुम बीमार हो या तुम्हारे बैल बीमार हैं? कहीं तुम्हारा हल टूट तो नहीं गया है?"

गोमा बोला, "नहीं अम्माँ! न तो मैं बीमार हूँ और न ही मेरे बैल बीमार हैं। मेरा हल भी नहीं टूटा है। टूटी है तो मेरी हिम्मत। अम्माँ, आप तो जानती हैं, तीन साल से वर्षा ठीक से नहीं हुई है। इस साल भी यही हाल है। खेत जोतकर क्या करूँ?"

बूढ़ी अम्माँ बोली, "देखो बेटा! वर्षा तुम्हारे हाथ में नहीं है। यह तो प्रकृति पर **निर्भर** है। जब बादल बनेंगे तो वर्षा अवश्य होगी। तुम्हारा काम है खेत जोत-जोतकर तैयार करना। तुम अपना काम समय पर करो। प्रकृति अपना काम अवश्य समय पर करेगी। वर्षा अवश्य होगी।"

गोमा **पुनः** बूढ़ी अम्माँ से बोला, "अम्माँ, खेत बहुत कठोर हो गए हैं। मेरे बैल दुबले हैं, इन्हें पेटभर चारा तक नहीं मिल रहा है। पीने के लिए पानी तक की दिक्कत है। चारा-पानी ही क्या, यहाँ तो पेड़ों की पत्तियाँ तक ख़त्म हो गई हैं। बेचारे बैल कैसे हल खींचें? वर्षा की उम्मीद हो तो हिम्मत भी बँधे।" गोमा ने निराश मन से अपनी बात कही।

बूढ़ी अम्माँ बोली, "बेटा! तुम निराशा की बात मत करो। पेड़ों की बात भी तुमने खूब कही। पेड़ तो यहाँ लोग काट रहे हैं। देखो, अब पेड़ भी कहाँ बचे हैं? अगर पेड़ अधिक होते तो वर्षा भी अवश्य हो जाती। सारे जंगल से पेड़ों की कटाई जारी है। पेड़ नहीं होंगे तो हरियाली कहाँ से होगी? हरियाली नहीं तो वर्षा भी नहीं। लेकिन जो हुआ सो हुआ। अब तो तुम लोग पेड़ों पर ध्यान दो। तुम निराश मत होओ। खेतों में हल चलाओ। उन्हें हाँक-जोत कर बोने के लिए तैयार करो। इस मौसम में कभी-न-कभी तो वर्षा अवश्य होगी।" बूढ़ी अम्माँ ने मुसकराकर गोमा की हिम्मत बढ़ाई। वह उठी और छड़ी टेकती हुई अपनी राह चल दी।

वैसे तो गोमा मन से निराश था मगर बूढ़ी अम्माँ की बातों से उसकी थोड़ी आशा बँधी। अगले दिन उसने पूरे उत्साह से अपना खेत जोतना शुरू कर दिया। उसने लगातार चार दिन तक हल चलाया। खेत खूब अच्छी तरह तैयार हो गए। गोमा अपना काम पूरा करके बहुत **प्रसन्न** था। अब वह बैलों को हाँकते हुए घर की ओर चल पड़ा। पूरी राह वह गुनगुनाता रहा। उस रात उसे नींद भी अच्छी तरह आई। चार दिन की कड़ी मेहनत के कारण वह **निढाल** होकर सोया।

सवेरे जब वह सोकर उठा तो गाय रँभा रही थी। बकरियाँ मिमिया रही थीं। सवेरे-सवेरे अपने पशुओं की ये आवाज़ें सुनने के लिए उसके कान तरस गए थे। वह **पुलककर** उठा। उसकी पत्नी ने **आँगन** से आवाज़ लगाई, "अजी सुनते हो!

Scanned with CamScanner

बाहर तो आओ। वर्षा होने वाली है।" गोमा झटपट बाहर आया। उसने देखा कि मौसम बहुत सुहाना हो गया है। आसमान में बादल घुमड़ आए थे। उसने बादलों को जी भरकर निहारा। उसे लगा मानो बादलों में बूढ़ी अम्माँ की मुसकराती हुई आकृति उभर आई हो। उसे बूढ़ी अम्माँ की बात रह-रहकर याद आ रही थी। उसने मन-ही-मन बूढ़ी अम्माँ को **प्रणाम** किया और

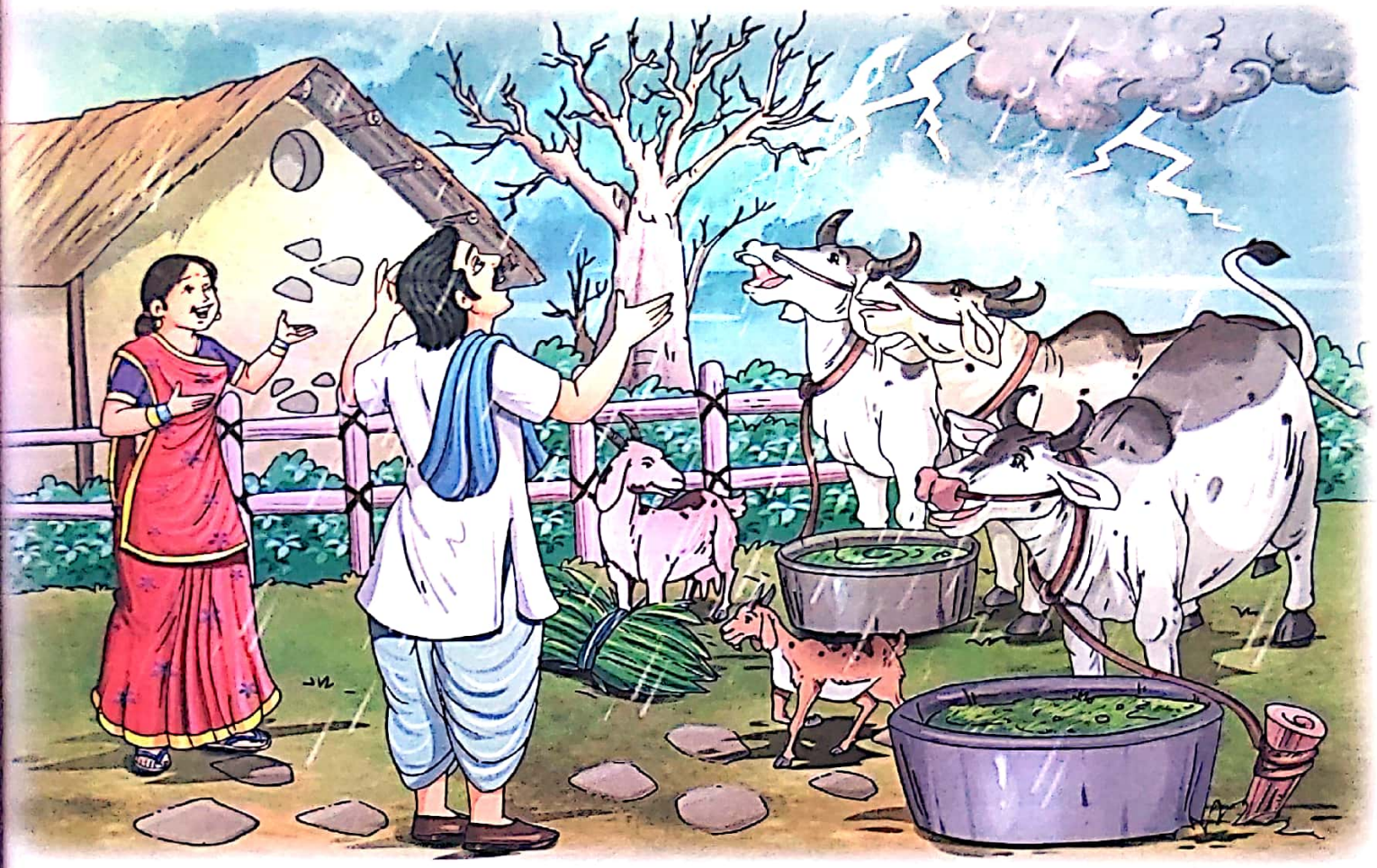

सोचा कि वे ठीक ही कह रही थीं कि तुम अपना काम समय पर करो। बादल बरसने लगे। आँगन तर-बतर हो गया। गोमा को लगा मानो बूढ़ी अम्माँ उससे कुछ कह रही हो। वह बूढ़ी अम्माँ से कुछ कहना चाहता था तभी बारिश और तेज़ हो गई।

–मध्यप्रदेश की लोककथा

मूल्य: निराशावादी नहीं आशावादी बनना तथा निरंतर कर्म करना।

शब्द-अर्थ

गुज़र-बसर – गुज़ारा करना
बाड़ा – पशुशाला
दुबला – कमज़ोर
प्रणाम – नमस्कार
नातिन – लड़की की लड़की
निढाल – ज़्यादा थका हुआ
आसार – लक्षण
डाँवाँडोल – कभी इधर कभी उधर, अस्थिर
निराश – हताश
मेड़ – खेत के इर्द-गिर्द मिट्टी का बना हुआ घेरा
आषाढ़ – सावन के पहले आने वाला महीना
आँगन – घर के अंदर या सामने का खुला स्थान
निर्भर – आश्रित
पुनः – दोबारा
प्रसन्न – खुश
पुलककर – खुश होकर
निर्णय – फ़ैसला
चारा – भूसा, गाय-भैंसों का भोजन

वाचन/श्रुतलेख– बाड़ा, आषाढ़, डाँवाँडोल, आसार, निर्णय, प्रसन्न, निढाल, आँगन, आकृति, प्रकृति, प्रणाम।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

कक्षा में स्मार्ट बोर्ड पर कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर के माध्यम से इस पाठ का अभ्यास-कार्य कराएँ।

पाठ से

मौखिक

सोचिए और बताइए–

(क) गोमा के काम पर न जाने के क्या-क्या कारण थे?

(ख) बूढ़ी अम्माँ ने गोमा को खाली बैठा देखकर क्या-क्या अनुमान लगाया?

(ग) बूढ़ी अम्माँ ने गोमा को उसके किस कर्तव्य के बारे में बताया?

(घ) यदि प्रकृति आप से बातें करे, तो आप उससे क्या-क्या बातें करेंगे?

लिखित

1. **संकेत गद्यांश को पाठ में ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

संकेत– एक था किसान ..... घर की ओर चल पड़ा। (पृष्ठ-19)

(क) गोमा क्या काम करता था?

(ख) "खेत जोतकर क्या करूँगा?" गोमा ने ऐसा क्यों सोचा?

(ग) वर्षा न होने का क्या असर हुआ था?

2. **अति लघु उत्तर लिखिए–**

(क) गोमा के पास कौन-कौन-से पशु थे?

(ख) भीषण गरमी में सूरज किसकी तरह लग रहा था?

(ग) बूढ़ी अम्माँ कहाँ जा रही थी?

3. **लघु उत्तर लिखिए–**

(क) गोमा बिना खेत जोते अपने बैलों को हाँककर घर की ओर क्यों चल दिया?

(ख) बूढ़ी अम्माँ ने वर्षा न होने का क्या कारण बताया?

(ग) बूढ़ी अम्माँ की बातों का गोमा पर क्या असर हुआ?

4. **दीर्घ उत्तर लिखिए–**

(क) निराश गोमा की हिम्मत किसने और कैसे बाँधी?

(ख) वर्षा का मौसम बन जाने पर गोमा की खुशी का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

पाठ से आगे

आपकी सोच-समझ

(क) गोमा के गाँव में तीन साल से नहीं के बराबर वर्षा हुई थी। पर्याप्त वर्षा न होने के कारण उसके गाँव के पशु-पक्षियों, खेतों और पेड़-पौधों में क्या-क्या बदलाव आए होंगे?

(ख) जिस दिन वर्षा होने वाली थी उस दिन बकरियों का मिमियाना और गाय का रँभाना क्या संदेश दे रहे थे?

Scanned with CamScanner

(क) गोमा को बूढ़ी अम्माँ नहीं मिलती? (ख) बूढ़ी अम्माँ की बातों पर गोमा ध्यान न देता?

(ग) गोमा खेतों को तैयार न करता? (घ) इस साल भी वर्षा न होती?

भाषा ज्ञान — विराम-चिह्न, 'ड़' व 'ढ़' में अंतर

1. विराम का अर्थ है- रुकना। हम अपनी बात करते समय भावों और विचारों के अनुरूप बीच-बीच में रुकते हैं। यह रुकना ही विराम कहलाता है। विराम की जानकारी देने वाले चिह्नों को **विराम-चिह्न** कहते हैं। विराम-चिह्न इस प्रकार हैं–

(i) वाक्य पूरा होने पर पूर्ण विराम (।) (ii) पूर्ण विराम से कम रुकने पर अर्द्ध विराम (;)

(iii) प्रश्न पूछने पर प्रश्नवाचक-चिह्न (?) (iv) थोड़ा रुकने पर अल्प विराम (,)

(v) सामासिक पदों के बीच योजक-चिह्न (-) (vi) हर्ष, शोक, आश्चर्य और दुख के लिए विस्मयादिबोधक (!)

(vii) निर्देश देने के लिए निर्देशक-चिह्न (–) (viii) किसी व्यक्ति के कथन के लिए उद्धरण-चिह्न (" ")

उपर्युक्त जानकारी के अनुसार दिए गए बॉक्स में सही विराम-चिह्न लगाइए–

गोमा पुनः बूढ़ी अम्माँ से बोला ☐☐ अम्माँ ☐ खेत बहुत कठोर हो गए हैं☐ मेरे बैल दुबले हैं ☐इन्हें पेटभर चारा तक नहीं मिल रहा है☐ पीने के लिए पानी तक की दिक्कत है☐ चारा☐ पानी ही क्या ☐यहाँ तो पेड़ों की पत्तियाँ तक ख़त्म हो गई हैं☐ बेचारे बैल कैसे हल खींचें ☐वर्षा की उम्मीद हो तो हिम्मत भी बँधे ☐☐गोमा ने निराश मन से अपनी बात कही☐

2. **विराम-चिह्न संबंधी अशुद्धियों को दूर करके वाक्यों को दोबारा लिखिए–**

(क) अगले दिन गोमा बड़े सवेरे सोकर उठा?

.....

(ख) ओ बूढ़ी अम्माँ। कहाँ से आ रही हो इतनी तेज़ धूप में!

.....

(ग) बूढ़ी अम्माँ ने पूछा? कहीं तुम्हारा हल तो नहीं टूट गया।

.....

(घ) बूढ़ी अम्माँ बोली। तुम अपना काम करो?

.....

(ङ) भूख! प्यास सहन करते! करते वे दुबले हो गए थे!

.....

3. **'ड़' और 'ढ़' अक्षरों से शब्दों की शुरुआत नहीं होती है। 'बड़ना' 'बढ़ना' यहाँ 'ड़' और 'ढ़' के बीच अंतर को समझिए तथा उनके प्रयोग से बने चार-चार शब्द लिखकर उनके अर्थ भी लिखिए–**

'ड़' के प्रयोग से बने शब्द – ..... – .... – .....

..... – .... – .....

'ढ़' के प्रयोग से बने शब्द – ..... – .... – .....

..... – .... – .....

Scanned with CamScanner

रचनात्मक अभिव्यक्ति

ये भी जानें

☞ भारत में जून के अंतिम दिनों से शुरू होकर सितंबर तक मानसून रहता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जून, जुलाई, अगस्त, सितंबर में मध्य भारत का तापमान अधिक होता है। इससे यहाँ की वायु गरम होकर फैलने लगती है और ऊपर उठने लगती है। इसी दौरान भारत के सुदूर दक्षिण में स्थित समुद्र का तापमान कुछ कम रहता है। इसलिए समुद्र से हवाएँ जलवाष्प लेकर भारत की ओर मुड़ जाती हैं और भारत में वर्षा करने लगती हैं।

परियोजना-निर्माण

☞ रेगिस्तान में साल-साल भर वर्षा नहीं होती, ऐसे में वहाँ पर रहने वाले लोग अपना जीवनयापन कैसे करते होंगे? इस विषय पर आपस में चर्चा कीजिए।

☞ खेती से प्राप्त होने वाले बहुमूल्य सामानों की सूची बनाइए और उस सूची में जो सामान आपके प्रदेश की खेती से जुड़े हैं, उनका अलग से उल्लेख भी कीजिए।

ऐसा कब-कब होता है–

☞ कई बार गोमा का मन डाँवाँडोल हुआ– गोमा खेतों में काम करने जा रहा था। कई बार उसने घर लौट जाने की बात भी सोची। ऐसे ही कभी-कभार आपका मन भी डाँवाँडोल ज़रूर होता होगा। ऐसा कब-कब होता है? दिए गए उदाहरण के अनुसार सोच-समझकर लिखिए–

(i) **जब होमवर्क कर रहे हैं और दोस्त खेलने के लिए बुला रहे हैं।**

(ii) .....

(iii) .....

(iv) .....

(v) .....

(vi) .....

हँसने की बारी

दोस्त के हाथ में नया फ़ोन देखकर–

Scanned with CamScanner

केवल पढ़ने के लिए

वन-एक राष्ट्रीय संपत्ति

हमारे जीवन तथा राष्ट्र की समृद्धि को बनाए रखने में वनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वनों से ऑक्सीजन प्राप्त होती है, जिसके बिना पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं है। वे वातावरण में गैसों का स्वस्थ संतुलन बनाए रखते हैं। सदियों से वन हमें ईंधन, चारा और इमारती लकड़ी उपलब्ध कराते आ रहे हैं। हमारे अनेक उद्योग कुछ ऐसे संसाधनों पर निर्भर हैं, जो जंगलों में पाए जाते हैं। वन मिट्टी के क्षरण और भूस्खलन को काफ़ी नियंत्रित रखते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में वन अपनी दूर-दूर तक फैली जड़ों से नदियों के किनारों की मिट्टी को आपस में जकड़े रहते हैं। पौधों का ज़मीन के ऊपर वायु में मौजूद हिस्सा बरसात में पानी के वेग को अपने में ही उलझाकर उसकी क्षरण शक्ति को कम कर देता है। वनों में धरती पर पाए जाने वाले छोटे-छोटे पौधे, ज़मीन पर गिरी हुई पत्तियों की मोटी तह और खाद-मिट्टी स्पंज का काम करते हैं। इसके अलावा, बरसात एवं बर्फ़ के पिघलने से आए पानी को बचाकर रखने में भी सहायता करते हैं। इस तरह से मैदानों में बाढ़ का प्रकोप कम होता है। पहाड़ियों से गिरने वाले पानी के वेग को कम करके वन, मैदानों में मिट्टी को अधिक पानी अवशोषित करने में सहायता करते हैं। इस प्रकार वे सूखे को भी रोकते हैं।

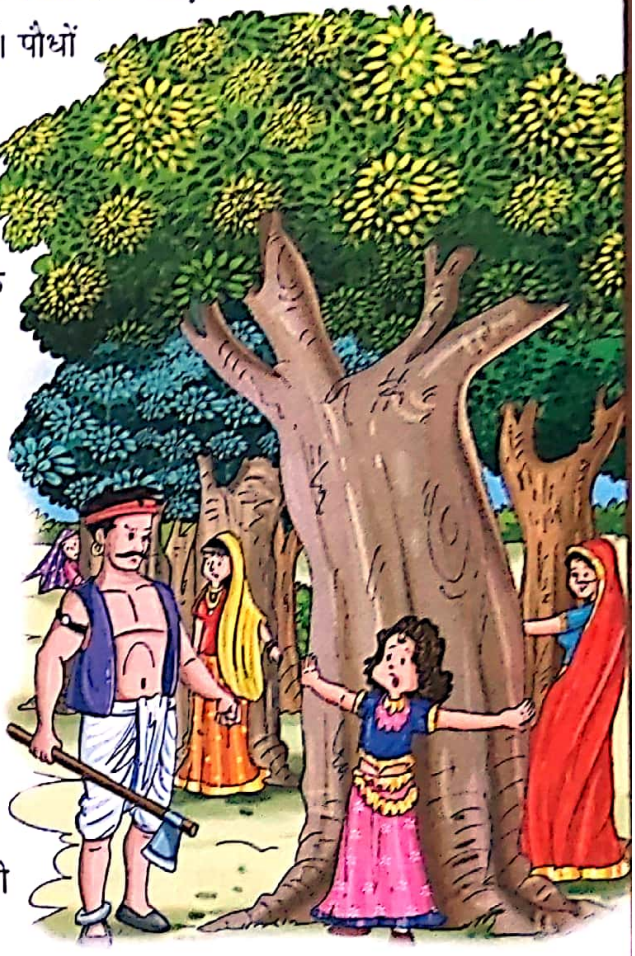

परंतु आज यही वन काटे जा रहे हैं। जो जैसा चाहे, अपने स्वार्थ के लिए उनका उपयोग कर रहा है। वनों की कटाई के गंभीर परिणामों को महत्त्व देना बहुत आवश्यक है। वनों के कारण पहाड़ियों से होकर तेज़ी-से गुज़रने वाले पानी की गति कम हो जाती है, जिससे भूक्षरण काफ़ी हद तक रुक जाता है।

वनों की कटाई ने पारिस्थितिकी तंत्र को भी प्रभावित किया है। रेड डेटा बुक के अनुसार पक्षियों की 139 और जंतुओं की 106 प्रजातियाँ पहले ही विलुप्त हो चुकी हैं। इसका प्रमुख कारण है—वनों का विनाश।

हिमालय क्षेत्र की नदियों के ऊपरी कछार में वनों के विनाश के विरुद्ध विरोध प्रकट करने के लिए सुंदरलाल बहुगुणा द्वारा किए गए 'चिपको आंदोलन' के अतिरिक्त कर्नाटक में 'आपिको आंदोलन' शुरू किया गया। इस आंदोलन में आंदोलनकर्ता तथा बच्चे व महिलाएँ पेड़ों को कटने से बचाने के लिए आवश्यकता पड़ने पर उनसे चिपक जाते हैं।

वन लगाने से ही दूर-दूर तक फैली हुई परती और बंजर भूमि को लहलहाते वनों में बदला जा सकेगा, जिससे राष्ट्रीय संपत्ति में वृद्धि होगी और साथ ही इससे पर्यावरण की सुरक्षा भी होगी।

हमें चाहिए कि हम और अधिक पेड़ लगाएँ और लगे हुए पेड़ों की सुरक्षा करें। आज के बाद हमारा नारा होना चाहिए—

'आज एक वृक्ष लगाओ और रोज़ाना उसकी देखभाल करो।'

Scanned with CamScanner

अक्षरों का महत्त्व

(निबंध)

यदि अक्षर न होते, तो हमें अपने इतिहास की जानकारी नहीं मिल पाती। हम प्रकृति के रोचक तथ्यों से अनभिज्ञ रहते। वैज्ञानिक अपनी सोच तथा आविष्कारों को अपने तक ही सीमित रखते। कवि अपने मन के उद्‌गारों को सामने नहीं ला पाते। अतः हमारे जीवन में अक्षर बहुत महत्त्व रखते हैं। आइए, इस पाठ में जानें कि अक्षर कैसे बने?

*कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड पर कारडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** का प्रयोग करें, जिसके माध्यम से बच्चे इस पाठ को रोचकपूर्ण एवं प्रभावशाली ढंग से पढ़ेंगे।*

यह पुस्तक अक्षरों से बनी है। सारी पुस्तकें अक्षरों से बनी हैं। तरह-तरह की पुस्तकें, तरह-तरह के अक्षर।

दुनिया में अब तक करोड़ों पुस्तकें छप चुकी हैं। हज़ारों पुस्तकें रोज़ छपती हैं। तरह-तरह के अक्षरों में हज़ारों की **तादाद** में रोज़ ही समाचार-पत्र छपते रहते हैं। इन सबके **मूल** में है- अक्षर। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि यदि आदमी अक्षरों को न जानता, तो आज इस दुनिया का क्या हाल होता!

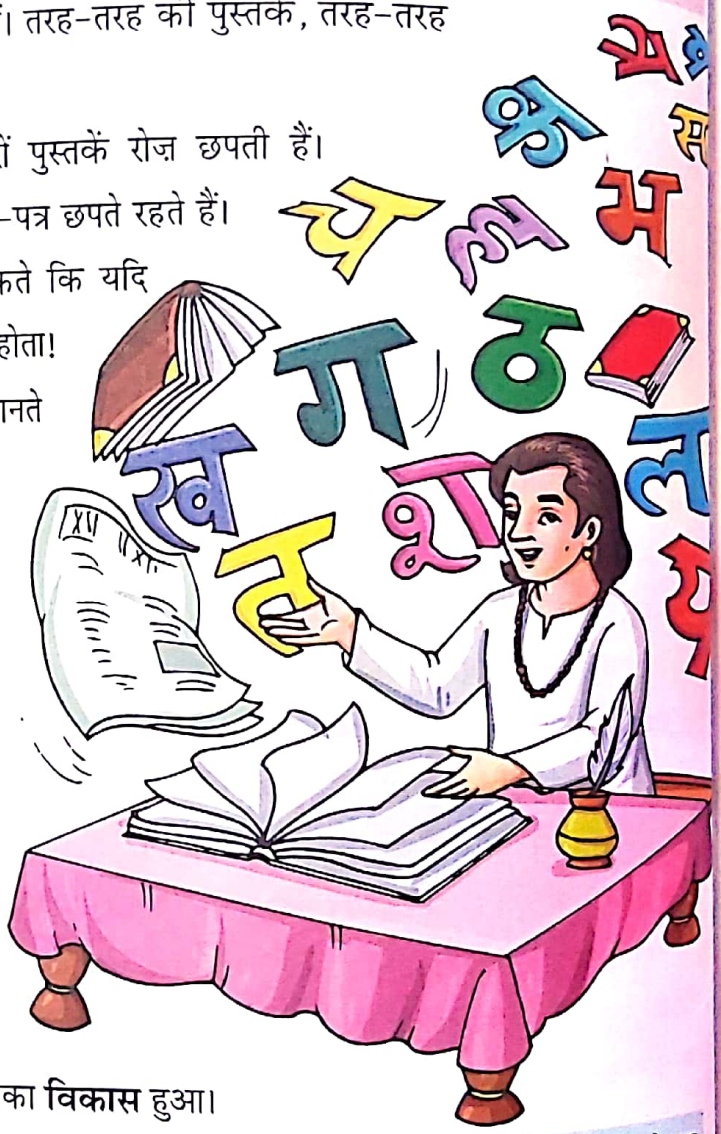

कोई कह सकता है कि हम अक्षरों को अनादि काल से जानते हैं! अक्षरों का ज्ञान हमें किसी ईश्वर से मिला है!

पुराने ज़माने के लोग सचमुच ही सोचते थे कि अक्षरों की खोज ईश्वर ने की है। पर आज हम जानते हैं कि अक्षरों की खोज किसी ईश्वर ने नहीं बल्कि स्वयं मनुष्य ने की है। अब तो हम यह भी जानते हैं कि किन अक्षरों की खोज किस देश में किस समय हुई?

हमारी यह धरती लगभग पाँच अरब साल पुरानी है। दो-तीन अरब साल तक इस धरती पर किसी प्रकार के जीव-जंतु नहीं थे। फिर करोड़ों साल तक केवल जानवरों और **वनस्पतियों** का ही इस धरती पर राज्य रहा। मनुष्य ने इस धरती पर पाँच लाख साल पहले जन्म लिया। धीरे-धीरे उसका **विकास** हुआ।

कोई दस हज़ार साल पहले मनुष्य ने गाँवों को **बसाना** शुरू किया। वह खेती करने लगा। वह पत्थरों के औज़ारों का इस्तेमाल करता था। फिर उसने ताँबे और काँसे के भी औज़ार बनाए।

सोचिए और बताइए– जब अक्षर नहीं थे तब लोग कैसे अपनी बात को समझाते होंगे?

प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के ज़रिए अपने भाव **व्यक्त** किए; जैसे- पशुओं, पक्षियों, आदमियों के चित्र। इन चित्र-संकेतों से बाद में भाव-संकेत **अस्तित्व** में आए; जैसे- एक छोटे वृत्त के चारों ओर किरणों की **द्‌योतक** रेखाएँ

Scanned with CamScanner

खींचने पर वह 'सूर्य' का चित्र बन जाता था। बाद में यही चित्र 'ताप' या 'धूप' का द्योतक बन गया। इस तरह अनेक भाव-संकेत अस्तित्व में आए। तब जाकर काफ़ी बाद में आदमी ने अक्षरों की खोज की। अक्षरों की खोज के **सिलसिले** को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। केवल छह हज़ार साल!

अक्षरों की खोज के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई। आदमी अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। तब से मानव को 'सभ्य' कहा जाने लगा। मनुष्य ने जब से लिखना शुरू किया तब से 'इतिहास' आरंभ हुआ। किसी भी देश का इतिहास तब से शुरू होता है जब से मनुष्य के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं। इस प्रकार, इतिहास को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। उसके पहले के काल को 'प्रागैतिहासिक काल' यानी इतिहास के पहले का काल कहते हैं।

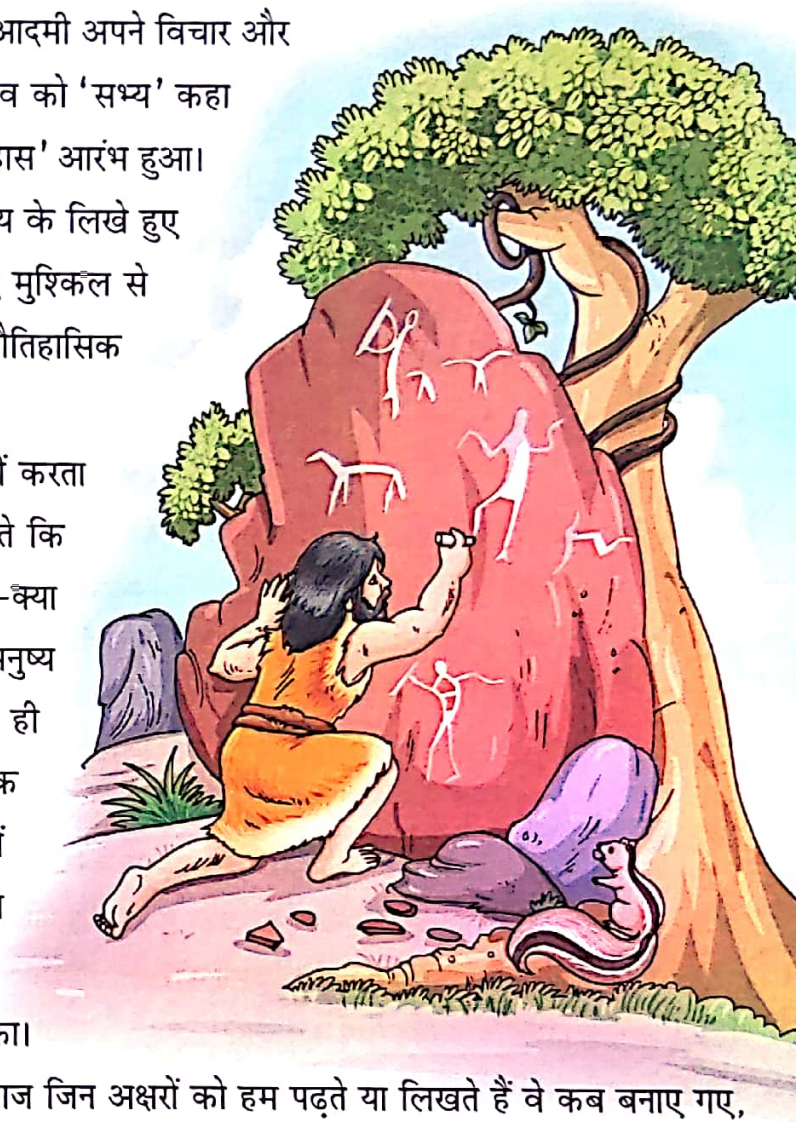

अत: हम देखते हैं कि यदि आदमी अक्षरों की खोज नहीं करता तो आज हम इतिहास को न जान पाते। हम यह न जान पाते कि पिछले हज़ारों सालों में आदमी किस प्रकार रहता था, क्या-क्या सोचता था, कौन-कौन राजा हुए इत्यादि। अक्षरों की खोज मनुष्य की सबसे बड़ी खोज है। अक्षरों की खोज करने के बाद ही मनुष्य अपने विचारों को लिखकर रखने लगा। इस प्रकार, एक पीढ़ी के ज्ञान का इस्तेमाल दूसरी पीढ़ी करने लगी। अक्षरों की खोज करने के बाद पिछले छह हज़ार सालों में मानव जाति का तेज़ी-से विकास हुआ।

यह महत्त्व है अक्षरों का और उनसे बनी हुई **लिपियों** का। अत: हम सबको अक्षरों की कहानी मालूम होनी चाहिए। आज जिन अक्षरों को हम पढ़ते या लिखते हैं वे कब बनाए गए, कहाँ बने और किसने बनाए, यह जानना ज़रूरी भी है।

–गुणाकर मुले

मूल्य: अक्षरों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है।

शब्द-अर्थ

तादाद	– संख्या	**मूल**	– बुनियाद, नींव	**वनस्पति**	– पेड़-पौधे, लताएँ आदि
विकास	– तरक्की	**व्यक्त करना**	– प्रकट करना	**बसाना**	– जीवन निर्वाह हेतु उचित साधन देना
अस्तित्व	– विद्यमान होना	**द्योतक**	– प्रकाश करने वाला	**प्रागैतिहासिक**	– लिखित इतिहास से पहले का
सिलसिला	– परंपरा, प्रथा	**लिपि**	– लिखने के लिए इस्तेमाल होने वाली विधि		

☞ **वाचन/श्रुतलेख–** अक्षर, समाचार-पत्र, ईश्वर, वनस्पति, प्रागैतिहासिक, द्योतक, महत्त्व, पीढ़ी।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

कक्षा में स्मार्ट बोर्ड पर कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर के माध्यम से इस पाठ का अभ्यास-कार्य कराएँ।

पाठ को

मौखिक

सोचिए और बताइए–

(क) किसी देश का इतिहास कब शुरू होता है?

(ख) अक्षरों की खोज के बाद हम क्या-क्या बातें जान पाए?

(ग) लिपि से आप क्या समझते हैं?

लिखित

1. संकेत गद्यांश को पाठ में ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

संकेत– पुराने ज़माने के लोग ..... काँसे के भी औज़ार बनाए। (पृष्ठ-26)

(क) हमारी यह धरती कितने वर्ष पुरानी है?

(ख) करोड़ों साल तक धरती पर केवल किसका राज्य रहा?

(ग) औज़ारों के विकास का कार्य किस प्रकार शुरू हुआ?

2. अति लघु उत्तर लिखिए–

(क) किसके बिना दुनिया की कल्पना करना असंभव है?

(ख) अक्षरों की खोज को लेकर पुराने लोगों को क्या गलतफ़हमी थी?

(ग) अक्षरों की खोज किसने की?

(घ) मानव सभ्य कब बना?

3. लघु उत्तर लिखिए–

(क) आज से करोड़ों वर्ष पहले पृथ्वी कैसी थी?

(ख) प्रागैतिहासिक काल किसे कहते हैं?

(ग) किस प्रकार एक पीढ़ी का ज्ञान दूसरी पीढ़ी के काम आने लगा?

4. दीर्घ उत्तर लिखिए–

(क) प्रागैतिहासिक काल में मानव किस तरह अपने भावों को व्यक्त करते थे?

(ख) अक्षरों की खोज के पश्चात मानव के जीवन में क्या-क्या बदलाव आए?

पाठ से आगे

अनुमान और कल्पना

(क) हज़ारों वर्ष पहले लोगों का खान-पान व पहनावा कैसा होगा?

(ख) यदि आपका जन्म हज़ारों साल पहले हुआ होता तो आप अपने विचारों का आदान-प्रदान कैसे करते?

Scanned with CamScanner

(क) हमारे पास अक्षर न होते? (ख) भाषा न होती?

भाषा ज्ञान — कारक, कारक के भेद, माप-तौल वाले शब्द

1. 'ने', 'को', 'में', 'पर' आदि कारक-चिह्न होते हैं। इनका प्रयोग वाक्यों में शब्दों का क्रिया से संबंध जोड़ने के लिए किया जाता है।

अब आप दिए गए अनुच्छेद में कारक-चिह्नों पर (गोला) लगाइए–

प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के जरिए अपने भाव व्यक्त किए; जैसे– पशुओं, पक्षियों, आदमियों के चित्र। इन चित्र-संकेतों से बाद में भाव-संकेत अस्तित्व में आए; जैसे– एक छोटे वृत्त के चारों ओर किरणों की द्योतक रेखाएँ खींचने पर वह 'सूर्य' का चित्र बन जाता था। बाद में यही चित्र 'ताप' या 'धूप' का द्योतक बन गया।

2. **कारक के आठ भेद होते हैं– कर्ता** (ने), **कर्म** (को), **करण** (से- के द्वारा), **संप्रदान** (के लिए, को), **अपादान** (से- अलग होने पर), **संबंध** (का, की, के), **अधिकरण** (में, पर) और **संबोधन** (हे!, अरे! आदि)। ध्यान देने योग्य है कि अपादान (से) का प्रयोग अलग होने के लिए होता है तथा करण (से) का प्रयोग 'द्वारा' के लिए होता है।

दिए गए वाक्यों में रेखांकित चिह्न में कारक का कौन-सा भेद है? ✓ निशान लगाकर बताइए–

(क) हम अक्षरों <u>को</u> अनादि काल से जानते हैं।

अधिकरण कारक ☐ कर्ता कारक ☐ कर्म कारक ☐

(ख) अक्षरों <u>का</u> ज्ञान हमें किसी ईश्वर से मिला है।

करण कारक ☐ संबंध कारक ☐ अपादान कारक ☐

(ग) मनुष्य <u>ने</u> गाँवों को बसाना शुरू किया।

अधिकरण कारक ☐ कर्ता कारक ☐ संप्रदान कारक ☐

(घ) चित्र-संकेतों <u>से</u> भाव-संकेत अस्तित्व में आए।

अपादान कारक ☐ कर्म कारक ☐ करण कारक ☐

(ङ) दुनिया <u>में</u> अब तक करोड़ों पुस्तकें छप चुकी हैं।

संप्रदान कारक ☐ कर्ता कारक ☐ अधिकरण कारक ☐

3. यदि किसी चीज़ को गिना न जा सके तो उसके साथ संख्या वाले शब्दों के अलावा माप-तौल आदि के शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है; जैसे– चार **गिलास** दूध।

अब आप बॉक्स में से सही शब्द छाँटकर खाली जगह भरिए–

(क) चार .... कागज़ (ख) दो .... पानी

(ग) छह .... कपड़ा (घ) एक .... नमक

(ङ) चार .... शक्कर (च) बारह .... ज़मीन

चम्मच, बंडल, किलो, बूँद, गज़, मीटर

रचनात्मक अभिव्यक्ति

श्रवण-वाचन

- अब आपके सामने अध्यापक/अध्यापिका एक कहानी सुनाएँगे। उसे ध्यानपूर्वक सुनकर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (अध्यापक/अध्यापिका श्रुतभाव ग्रहण हेतु पृष्ठ-120 देखें।)

(क) अलका के पिता जी ने उसे क्या सलाह दी?

(ख) लक्ष्मी की बेटी का क्या नाम था?

(ग) अलका को किस बात का अफ़सोस हुआ?

(घ) अलका ने क्या तय किया?

चित्रांकन-निर्माण

- यदि अक्षर नहीं होते, तो आप नहाने-धोने, खेलने, भोजन करने, सोने आदि क्रियाओं को प्रकट करने के लिए क्या-क्या चित्र बनाते? अपने पूरे दिन के कार्यों को एक चार्ट पेपर पर चित्र-संकेतों के माध्यम से दर्शाइए।
- कई बार संकेतों के द्वारा हम अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं; जैसे- मुँह पर उँगली रखकर चुप रहने का इशारा। आप कौन-कौन-सी बातों को इशारों में समझाते हैं?
- किसी बात को बोलना और उसे लिखकर प्रकट करना, दोनों में से कौन-सा साधन अधिक महत्त्व रखता है और क्यों?

खोज

- अक्षरों से पहले किसी देश या राज्य की मुद्रा की पहचान किस प्रकार की जाती थी? विभिन्न देशों की प्राचीन मुद्राओं के बारे में जानकारी लेकर इस प्रश्न का उत्तर दीजिए।
- हर वैज्ञानिक खोज के साथ किसी-न-किसी वैज्ञानिक का नाम जुड़ा होता है लेकिन अक्षरों के साथ ऐसा नहीं है, क्यों? पता कीजिए।

लेखन

- 'अक्षरों का महत्त्व' विषय पर एक छोटा-सा अनुच्छेद लिखिए।

हँसने की बारी

अध्यापक ने एक बच्चे से पूछा–

पाठ में प्रयुक्त शब्दों की वर्तनी के पुराने और नए रूप

पुराना रूप	नया रूप	पुराना रूप	नया रूप
द्योतक	दूयोतक	आरम्भ	आरंभ